International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उच्च शिक्षा की समस्याओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ० रंजना गुप्ता,
विभागाध्यक्षा,शिक्षाशास्त्र विभाग
श्री रामेश्वरदास अग्रवाल कन्या महाविद्यालय,हाथरस (उत्तर प्रदेश)

शोध सारांश

किसी भी राष्ट्र के किसी भी क्षेत्र में विकास करने के लिये दो मूलभूत साधनों की आवश्यकता होती है प्राकृतिक संसाधन और मानव संसाधन I उच्च शिक्षा, उच्च स्तर के मानव संसाधनों का निर्माण करती है। यह देखा गया है, कि जिस राष्ट्र में उच्च स्तरीय मानव संसाधन की जितनी अधिक उपलब्धता होती है, वह राष्ट्र उतनी ही अधिक तेजी से विकास करता है। किसी राष्ट्र के किसी भी क्षेत्र में विकास के लिये उच्च स्तर के मानव संसाधन की आवश्यकता होती है। राष्ट्र का आर्थिक विकास तो औद्योगीकरण पर ही निर्भर करता है और औद्योगीकरण निर्भर करता है- वैज्ञानिक एवं तकनीशियनों पर, इंजीनियर और प्रशासकों पर और इनका निर्माण किया जाता है उच्च शिक्षा द्वारा।परंतु उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अनेको ऐसी समस्याएँ है जिनको दूर किए बिना राष्ट्र का विकास सम्भव नहीं है।इस अध्ययन का उद्देश्य उन समस्याओं का पता लगाना है जो उच्च शिक्षा की प्रगति के मार्ग में बाधा उत्पन्न करती है।इस अध्ययन में वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया और स्व- निर्मित प्रश्नावली द्वारा प्राप्त आँकड़ों की व्याख्या व विश्लेषण के लिए प्रतिशत की गणना की गयी ।अध्ययन के परिणामों के अनुसार उच्च शिक्षा में प्रवेश लेने वाले छात्र / छात्राओं में अपेक्षित ज्ञान का अभाव, अनुशासनहीनता ,सतत् मूल्यांकन का न होना,आरक्षण के कारण योग्य छात्रों को प्रवेश न मिल पाना,अनियमित शिक्षा सत्र व प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा का गिरता स्तर शिक्षकों ने उच्च शिक्षा की मुख्य समस्याएँ माना।

Key-Words- उच्च शिक्षा,अभिमत,शिक्षक , समस्याएँ

देश के विकास के लिये मानवीय संसाधनों को विकसित करना आवश्यक होता है। मानवीय संसाधनों के विकास का महत्वपूर्ण कार्य शिक्षा द्वारा ही सम्भव किया जाता है। मानवीय संसाधनों के विकास की दृष्टि से उच्च शिक्षा का

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

महत्वपूर्ण स्थान है। यद्यपि शिक्षा के सभी स्तर मानव संस्थान के विकास के महत्वपूर्ण अवयव है लेकिन यह उच्च शिक्षा ही है जो देश के आर्थिक विकास के जरिये जन साधारण के जीवन की गुणवत्ता में योगदान देती है। उच्च कोटि के सत्यान्वेषण के लिये विश्वविद्यालय ही प्रयोगशालायें हैं। ज्ञान के क्षेत्र को विस्तृत बनाने के लिये विश्वविद्यालय महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। इग्लैंण्ड, अमेरिका, रूस तथा अन्य देशों में प्राथमिक शिक्षा को शिक्षा की आधारशिला के रूप में और उच्च शिक्षा को मुकुट और ताज के रूप में स्वीकार किया गया है। उच्च शिक्षा का यही स्थान भारत में भी है।

आधुनिक युग में भी उच्च शिक्षा की प्रगति निरन्तर हो रही है और कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों की संख्या में भी असाधारण वृद्धि हो रही है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी कतिपय समस्याएँ है और भारत की शैक्षिक व्यवस्था ऐसी ही अनेक समस्याओं से विपन्न है। ये समस्याएँ हैं-- उद्देश्यहीनता, दोषपूर्ण पाठ्यक्रम, शिक्षा का माध्यम, विशिष्टीकरण,दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली, शिक्षा का स्तर निम्न होना,अनुशासनहीनता, दलगत राजनीति इत्यादि विश्वविद्यालय स्तर पर इन समस्याओं का निराकरण अत्यन्त आवश्यक है।

। हुगाँयू कबीर ने कहा है कि -"बहुत बार यह कहा गया है कि विश्वविद्यालयों में जो शिक्षा दी जाती है, वह व्यक्ति को व्यावहारिक जीवन के लिये तैयार नहीं करती। विशेष रूप से कहा जाता है कि विश्वविद्यालयों से पढ़कर निकलने वाले छात्रों में शारीरिक श्रम और देहाती जीवन के प्रति अरूचि हो जाती है। इस प्रकार विश्वविद्यालय एक ऐसा अभिकरण बन गये हैं जो गांवों से योग्य और होनहार को शहरों में खींच लाते हैं परन्तु इस प्रकार गाँव को हानि हो जाती है उससे शहरों को लाभ हो जाता हो, यह बात नही। गाँव के थे, वे शहर की अज्ञात जनसंख्या के एक हताश और कटु भावना से भरे छोटे से समाज में नेता बनने के बजाय जो कि बड़ी आसानी से बन सकते सदस्य मात्र बनकर रह जाते हैं। "

अतः वर्तमान भारत में उच्च शिक्षा का स्तर दिन प्रतिदिन निम्न होता चला जा रहा है ।उच्च शिक्षा में उन्नयन को आवश्यकता को देखते हुए सन् **1947** में आयोग का गठन किया। इस आयोग के सुझावों के आधार पर देश में उच्च शिक्षा के क्षेत्र विश्वविद्यालय में सुधार की प्रक्रियाएँ प्रारम्भ हुई।

शिक्षा देश के विकास का प्रमुख आधार है यदि उच्च शिक्षा का गुणात्मक विकास नहीं हुआ तो प्रशासनिक और तकनीकी प्रगति, बौद्धिक और सामाजिक प्रगति के अवरूद्ध होने की सम्भवनायें बढ़ जाती हैं। डॉ० आर०के० सिंह का विचार है

"देश का वैभव विश्वविद्यालय से सम्बद्ध होता है। दूषित विश्वविद्यालय सम्पूर्ण राष्ट्र को दूषित कर देता है"।

अतः यह आवश्यक हो जाता है कि विश्वविद्यालय प्रारूप में परिवर्तन किया जाय।डॉ॰ राधाकृष्णन कमीशन ने लिखा है-"विश्वविद्यालय अपनी प्राचीन पद्धति से आवद्ध नहीं रह सकते हैं, समाज की बढ़ती हुई जटिलता और उसकी बदलती हुई संरचना के कारण विश्वविद्यालयों को अपने उद्देश्यों में परिवर्तन करना आवश्यक हो गया है।"
बढ़ती हुयी जनसंख्या और उच्च शिक्षा की मांग को देखते हुए भारत में उच्च शिक्षा के संख्यात्मक प्रसार पर विशेष ध्यान दिया गया। उच्च शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ नई समस्यायें उत्पन्न होती रही। कहा जा रहा है कि शिक्षा के स्तर और गुणवत्ता में ह्रास हो रहा है, उच्च शिक्षा उद्देश्यविहीन हो गई है, उच्च शिक्षा का पाठ्यक्रम अनुपयोगी है, स्तरीय अनुसंधान नहीं हो रहे, और विश्वविद्यालय परिसर में अशान्ति बढ़ रही है, प्रवेश की समस्या दिन प्रतिदिन जटिल हो रही है।
इस समस्या का चुनाव उच्च शिक्षा की समस्याओं का गहन अध्ययन के लिये किया गया, जिससे उच्च शिक्षा की समस्याओं के प्रति शिक्षा विशेषज्ञों, सम्बन्धित अधिकारियों तथा विभागों आदि का ध्यान आकृष्ट किया जा सके, तथा उच्च शिक्षा के उचित विकास के मार्ग में योगदान दिया जा सके।

शोध के उद्ददेश्य

उच्च शिक्षा की समस्याओं के सन्दर्भ में शिक्षको के अभिमत का अध्ययन करना ।

शोध विधि

उच्च शिक्षा की समस्याओं को जानने हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

प्रतिदर्श चयन

न्यादर्श के चयन के लिए समय व सीमा और उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान अध्ययन के लिए हाथरस जिले के 3 वित्तपोषित महाविद्यालयों के 50 शिक्षक व शिक्षिकाओं को चुना।
उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों का चयन सुविधानुसार न्यादर्श विधि द्वारा किया गया।

शोध उपकरण

उच्च शिक्षा की समस्याओं को जानने हेतु शोधार्थिनी ने इस शोध हेतु एक स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्राप्त आँकड़ों की व्याख्या और विश्लेषण करने के लिए प्रतिशत का प्रयोग किया गया।

परिणामों की व्याख्या व विश्लेषण

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उच्च शिक्षा की समस्याओं के सन्दर्भ में शिक्षकों के अभिमत का अध्ययन करने के लिए मतावली को 6 भागों में बाँटा गया। प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर प्रश्नावली के प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के सन्दर्भ में प्रतिशत ज्ञात किया गया जिसे विभिन्न क्षेत्रानुसार अलग-अलग तालिकाओं में निम्न प्रकार से वर्णित किया गया:-

1.शिक्षण अधिगम से सम्बन्धित समस्यायें । 2.अनुशासनहीनता से सम्बन्धित समस्यायें ।

3. शोधकार्यों से सम्बन्धित समस्यायें ।

4. मूल्यांकन से सम्बन्धित समस्यायें ।

5. प्रवेश से सम्बन्धित समस्यायें ।

6. अन्य समस्यायें ।

<u>1.उच्च शिक्षा में शिक्षण अधिगम से सम्बन्धित समस्याओं के सन्दर्भ में शिक्षकों के अभिमत का अध्ययन</u>

उच्च शिक्षा में शिक्षण अधिगम से सम्बन्धित समस्याओं के सन्दर्भ में शिक्षकों के अभिगत को स्पष्ट करने वाली तालिका संख्या 1 द्वारा प्रदर्शित किया गया है-

<u>तालिका संख्या-1</u>

समस्या से सम्बन्धित पद	**शिक्षकों के उत्तर(प्रतिशत में)**
सैद्धान्तिक विषयों की अधिकता	62
कक्षाओं का उचित आकार न होना	64
कार्य दिवसों का अपर्याप्त होना	76
उच्च शिक्षा में प्रवेश लेने वाले छात्र/छात्राओं में अपेक्षित ज्ञान का अभाव	94
प्रशिक्षित तथा योग्य शिक्षकों की कमी	68
शिक्षण अधिगम हेतु मनोवैज्ञानिक तथा नवीनतम शिक्षण विधियों का प्रयोग न होना।	76
शिक्षा का माध्यम उचित न होना	42
औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा अभिकरणों की पर्याप्त सुविधा न होना	74
सीखने व पढ़ने के लिए उचित पुस्तकालयों का न होना।	78
सुसज्जित प्रयोगशालाओं का न होना।	80

तालिका संख्या 1 में प्रदर्शित परिणामों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि शिक्षण अधिगम से सम्बन्धित समस्याओं का वरीयताक्रम के अनुसार अध्ययन किया जाये तो सर्वाधिक 94% शिक्षकों ने उच्च शिक्षा में प्रवेश लेने वाले छात्र/छात्राओं में अपेक्षित ज्ञान का अभाव माना जबकि 80% में सुसज्जित प्रयोगशालाओं का न होना माना, 78% ने सीखने व पढ़ने के लिए उचित पुस्तकालयों का न होना, 76% ने कार्य दिवसों का अपर्याप्त होना व शिक्षण

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अधिगम हेतु मनोवैज्ञानिक तथा नवीनतम शिक्षण विधियों का प्रयोग न होना, **74%** ने औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा अभिकरणों की पर्याप्त सुविधा न होना, **68%** ने प्रशिक्षित तथा योग्य शिक्षकों की कमी, **64%** ने कक्षाओं का उचित आकार न होना, **62%** ने सैद्धान्तिक विषयों की अधिकता का होना माना जबकि केवल **42%** शिक्षकों ने शिक्षा का माध्यम उचित न होना स्वीकार किया।

2.उच्च शिक्षा में अनुशासनहीनता से सम्बन्धित समस्याओं के संदर्भ में शिक्षकों के अभिमतों का अध्ययन

-

उच्च शिक्षा में अनुशासनहीनता से सम्बन्धित समस्याओं के संदर्भ में शिक्षकों के अभिमत को स्पष्ट करने वाली तालिका

तालिका संख्या-2

समस्या से सम्बन्धित पद	**शिक्षकों के उत्तर (प्रतिशत में)**
छात्र/छात्राओं का अनिश्चित भविष्य	86
उच्च शिक्षा के बाद उचित रोजगार न मिल पाना	84
शिक्षक छात्र संख्या का अनुपात उचित न होना	90
छात्रों एवं शिक्षकों में पारस्परिक सम्पर्क का अभाव	74
शिक्षा संस्थाओं में शिक्षण तथा अधिगम हेतु अपर्याप्त सुविधायें	66
शिक्षा संस्थाओं में छात्र संघों के चुनाव व राजनैतिक दलों का हस्तक्षेप	48
जनसंचार माध्यमों का अत्यधिक व अनुचित प्रयोग	66
सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों में ह्रास	86
समाज में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता	92
निर्देशन व परामर्श सेवाओं का अभाव	90

तालिका संख्या 2 में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट होता है कि अनुशासनहीनता से सम्बन्धित समस्याओं में **92%** शिक्षकों ने समाज में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता को जिम्मेदार माना, **90%** शिक्षकों ने शिक्षक छात्र संख्या का अनुपात उचित न होना तथा निर्देशन व परामर्श सेवाओं का अभाव, **86%** ने छात्र/छात्रओं का अनिश्चित भविष्य तथा सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों में ह्रास, **84%** ने उच्च शिक्षा के बाद उचित रोजगार न मिल पाना, **74%** ने छात्रों एवं शिक्षकों में पारस्परिक सम्पर्क का अभाव, **66%** ने शिक्षा संस्थाओं में शिक्षण तथा अधिगम हेतु अपर्याप्त सुविधायें तथा जनसंचार माध्यमों का अत्यधिक व अनुचित प्रयोग माना ।अनुशासनहीनता से सम्बन्धित समस्याओं में **48%** शिक्षकों ने शिक्षा संस्था में छात्र संघों के चुनाव व राजनैतिक दलों का हस्तक्षेप होना स्वीकार किया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

3. उच्च शिक्षा में शोध कार्यों से सम्बन्धित समस्याओं के संदर्भ में शिक्षकों के अभिमत का अध्ययन

उच्च शिक्षा में शोध कार्यों से सम्बन्धित समस्याओं के संदर्भ में शिक्षकों के अभिमतों को स्पष्ट करने वाली तालिका

तालिका संख्या-3

समस्या से सम्बन्धित पद	**शिक्षकों के उत्तर (प्रतिशत में)**
मौलिक व स्तरीय अनुसन्धानों का अभाव	76
सक्षम तथा योग्य शोध निर्देशकों की कमी	68
शोध निर्देशकों की सघन शिक्षण दिनचर्या	50
शोधकार्य निर्देशन हेतु कोई अतिरिक्त पारिश्रमिक न मिलना	78
शोध के लिए पर्याप्त अनुदान न मिलना	78
अनुसंधान के लिए उचित संसाधन उपलब्ध न होना	80
सेमिनार एवं कार्यशाला आदि का उचित आयोजन न होना	78
स्नातकोत्तर स्तर पर अनुसंधान विधियों का अध्ययन अनिवार्य न होना।	74
शोध छात्र/छात्रओं हेतु किसी पूर्व प्रशिक्षण की व्यवस्था न होना	82
अनुसंधान कार्यों में अध्यापकों तथा प्रशासकों का उचित सहयोग न मिलना।	66

तालिका संख्या **3** में प्रदर्शित परिणामों को स्पष्ट करने पर यह ज्ञात हुआ कि शोध कार्यों से सम्बन्धित समस्याओं में सबसे अधिक **82%** शिक्षकों ने शोध छात्र/छात्राओं उचित संसाधन उपलब्ध न होना, **78%** ने शोध कार्य निर्देशन हेतु कोई अतिरिक्त कार्यशाला आदि का उचित आयोजन न होना, **76%** शिक्षकों ने मौलिक व स्तरीय अनुसन्धानों का अभाव, **74%** ने स्नातकोत्तर स्तर पर अनुसन्धान विधियों का अध्ययन अनिवार्य न होना। **68%** ने सक्षम तथा योग्य शोध निर्देशकों की कमी, **66%** ने अनुसन्धान कार्यों में अध्यापकों तथा प्रशासकों का उचित सहयोग न मिलना, **50%** शिक्षकों ने शोध निर्देशकों की सघन शिक्षण दिनचर्या को स्वीकार किया।

4.उच्च शिक्षा में मूल्यांकन से सम्बन्धित समस्याओं के सन्दर्भ में शिक्षकों के अभिमत का अध्ययन

उच्च शिक्षा में मूल्यांकन से सम्बन्धित समस्याओं के सन्दर्भ में शिक्षकों के अभिमतों को स्पष्ट करने वाली तालिका

तालिका संख्या-4

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

समस्या से सम्बन्धित पद	**शिक्षकों के उत्तर(प्रतिशत में)**
दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली।	74
सतत् मूल्यांकन का न होना।	86
ग्रेड प्रणाली का न होना।	50
सेमिस्टर प्रणाली का न होना।	70
मूल्यांकन में पारदर्शिता का न होना।	82
मूल्यांकन में अशैक्षिक पक्षों को स्थान न देना।	48
मूल्यांकन कार्य से सम्बन्धित शिक्षकों के लिए अभिनवन कार्यक्रमों की व्यवस्था का न होना।	78
मूल्यांकन हेतु प्रदत्त उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या का उचित निर्धारण न होना।	52
वस्तुनिष्ठ एवं समस्या आधारित प्रश्नों का प्रश्न पत्रो में अभाव होना ।	44
उच्च स्तर की परीक्षाओं में विश्वसनीयता एवं वैधता का अभाव होना	60

तालिका संख्या 4 में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट होता है कि यदि मूल्यांकन से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन किया जाये तो सर्वाधिक 86% शिक्षकों ने सतत् मूल्यांकन का न होना, 82% शिक्षकों ने मूल्यांकन में पारदर्शिता का न होना, 78% शिक्षकों ने मूल्यांकन कार्य से सम्बन्धित शिक्षकों के लिए अभिनवन कार्यक्रमों की व्यवस्था न होना, 74% शिक्षकों ने दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली, 70% ने सेमिस्टर प्रणाली का न होना, 60% ने उच्च स्तर की परीक्षाओं में विश्वसनीयता एवं वैधता का अभाव होना, 52% शिक्षकों ने मूल्यांकन हेतु प्रदत्त उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या का

उचित निर्धारण न होना, **50%** ने ग्रेड प्रणाली का न होना, जबकि मूल्यांकन में अशैक्षिक पक्षों को स्थान न देने को केवल **48%** शिक्षकों ने मूल्यांकन से सम्बन्धित समस्याओं का कारण माना ।

5. उच्च शिक्षा में प्रवेश से सम्बन्धित समस्याओं के सन्दर्भ में शिक्षकों के अभिमत का अध्ययन

उच्च शिक्षा में प्रवेश से सम्बन्धित समस्याओं के सन्दर्भ में शिक्षकों के अभिमतों को स्पष्ट करने वाली तालिका

तालिका संख्या-5

समस्या से सम्बन्धित पद	**शिक्षकों के उत्तर(प्रतिशत में)**
कॉलेज में विद्यार्थियों की बढ़ती भीड़।	70
अपेक्षित योग्यता न रखने वाले छात्रों का प्रवेश ।	82
आरक्षण के कारण योग्य छात्रों को प्रवेश न मिल पाना ।	90
कॉलेजों व विश्वविद्यालय में अवांछनीय तत्वों को प्रवेश मिलना	74
प्रवेश के नियमों में शिथिलता ।	68
उच्च शिक्षा की संस्थाओं में प्रवेश के नियमों में एकरूपता का न होना।	56
उचित प्रवेश परीक्षा का प्रवेश हेतु आयोजन न होना।	80
विद्यार्थियों की संख्या का निर्धारण संस्थाओं में उपलब्ध शिक्षक संख्या व शिक्षण सुविधाओ के आधार पर न होना।	82
प्रवेश की प्रक्रिया का निर्धारित समय में पूर्ण न होना।	80
प्रवेश पूर्व परीक्षा के प्राप्तांकों के आधार पर होना ।	58

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तालिका संख्या **5** में प्रदर्शित परिणामों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि प्रवेश से सम्बन्धित समस्याओं के संदर्भ में **90%** शिक्षकों ने आरक्षण के कारण योग्य संख्या व शिक्षण सुविधाओं के आधार पर न होना माना, **80%** ने प्रवेश हेतु उचित प्रवेश परीक्षा का आयोजन न होना तथा प्रवेश की प्रक्रिया का निर्धारित समय में पूर्ण न होना, **74%** शिक्षकों ने कॉलेजों व विश्वविद्यालय में अवांछनीय तत्वों का प्रवेश मिलना, **70%** ने कालेज में विद्यार्थियों की बढ़ती भीड़, **68%** ने प्रवेश के नियमों में शिथिलता, **58%** ने प्रवेश पूर्व परीक्षा के प्राप्तांकों के आधार पर होना, **56%** शिक्षकों ने स्वीकार किया कि छात्रों को प्रवेश न मिल पाना माना। जबकि **82%** शिक्षकों ने अपेक्षित योग्यता न रखने वाले छात्रों का प्रवेश तथा विद्यार्थियों की संख्या का निर्धारण संस्थाओं में उपलब्ध शिक्षक संख्या व शिक्षण सुविधाओं के आधार पर न होना माना , **80%** ने प्रवेश हेतु उचित प्रवेश परीक्षा का आयोजन न होना तथा प्रवेश की प्रक्रिया का निर्धारित समय में पूर्ण न होना, **74%** शिक्षकों ने कॉलेजों व विश्वविद्यालय में अवांछनीय तत्वों का प्रवेश मिलना, **70%** ने कालेज में विद्यार्थियों की बढ़ती भीड़, **68%** ने प्रवेश के नियमों में शिथिलता, **58%** ने प्रवेश पूर्व परीक्षा के प्राप्तांकों के आधार पर होना, **56%** शिक्षकों ने स्वीकार किया कि उच्च शिक्षा की संस्थाओं में प्रवेश के नियमों में एकरूपता नहीं है।

6.शिक्षा में अन्य समस्याओं के सन्दर्भ में शिक्षकों के अभिमत का अध्ययन

उच्च शिक्षा में अन्य समस्यओं के सन्दर्भ में शिक्षकों के अभिमतों को स्पष्ट करने वाली तालिका

तालिका संख्या-6

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

समस्या से सम्बन्धित पद	**शिक्षकों के उत्तर(प्रतिशत में)**
उच्च शिक्षा का उद्देश्यहीन होना।	66
उच्च शिक्षा का दोषपूर्ण पाठ्यक्रम	64
पाठ्यक्रम का जीवनोपयोगी न होना।	70
पाठ्यक्रम का प्रभावी व्यावसायीकरण न होना।	78
शिक्षा का निजीकरण	70
विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालयों को उचित स्वायत्तता न मिलना।	76
परीक्षाफल समय पर घोषित न होना।	90
अनियमित शिक्षा सत्र	94
उच्च शिक्षा में बढ़ता हुआ अपव्यय व अवरोधन	74
विद्यालय स्तर पर दोषपूर्ण शिक्षा	82
प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा का गिरता स्तर	94
माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम का उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम से तालमेल का अभाव	82

तालिका संख्या 6 में प्रदर्शित परिणामों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अन्य समस्याओं के सन्दर्भ में **94%** शिक्षकों ने अनियमित शिक्षा सत्र तथा प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा का गिरता स्तर को जिम्मेदार माना, **90%** शिक्षकों ने परीक्षाफल समय पर घोषित न होना, **82%** शिक्षकों ने विद्यालय स्तर पर दोषपूर्ण शिक्षा तथा माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम का उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम से तालमेल का अभाव, **78%** शिक्षकों ने पाठ्यक्रम का प्रभावी व्यावसायीकरण न होना, **76%** शिक्षकों ने विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालयों को उचित स्वायत्तता न मिलना,

74% शिक्षकों ने उच्च शिक्षा में बढ़ता हुआ अपव्यय व अवरोधन, **70%** ने पाठ्यक्रम का जीवनोपयोगी न होना तथा शिक्षा का निजीकरण, **66%** शिक्षकों ने उच्च शिक्षा का उद्देश्यहीन होना तथा **64%** शिक्षकों ने स्वीकार किया कि उच्च शिक्षा का दोषपूर्ण पाठ्यक्रम अन्य समस्याओं में सबसे अधिक जिम्मेदार है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

प्रोफेसर एस०पी० गुप्ता(2013)"अनुसंधान संदर्शिका सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि"शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद

राय, पारस नाथ(2010-11),"अनुसन्धान परिचय", लक्ष्मी नारायण अग्रवाल,आगरा

सिन्हा, नीता (2010) प्रो० मदन मोहन,"भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएँ,न्यू कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद

रेखा (2010)"स्त्री शिक्षा की समस्याओं के सन्दर्भ में शिक्षकों के अभिमत का अध्ययन" श्री रामेश्वर दास अग्रवाल कन्या महाविद्यालय

वार्ष्णेय,भावना (2009) "प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन" श्री रामेश्वर दास अग्रवाल कन्या महाविद्यालय, हाथरस

डॉ० रामपाल सिंह,डॉ० ओ०पी० शर्मा (2007-08)
"शैक्षिक अनुसन्धान एवं सांख्यिकी",अग्रवाल पब्लिकेशन,आगरा

शर्मा, आर०ए० (2007)"शिक्षा अनुसन्धान",आर० लाल बुक डिपो,मेरठ

रमन विहारी लाल (2006)"भारतीय शिक्षा का विकास व उनकी समस्याएँ",रस्तौगी प्रकाशन,मेरठ

गुप्ता, एस०पी०(2002), "भारतीय शिक्षा का इतिहास,विकास एवं समस्याएँ",शारदा पुस्तक भवन,इलाहाबाद

एच0के0 कपिल (2001)"अनुसन्धान विधियाँ" एच०पी० भार्गव बुक हाउसभार्गव भवन,कचहरी घाट आगरा

अग्रवाल, वी० वी० (1980),"आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ",विनोद पुस्तक मन्दिर,आगरा-2

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पाण्डेय, रामशकल **(1979)**"भारतीय शिक्षा की सामयिक समस्याएँ"विनोद पुस्तक मन्दिर,आगरा-**2**

पाठक, पी० डी०**(1974),**"भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ",विनोद पुस्तक मन्दिर,आगरा

वर्मा,प्रीती वर्मा व श्रीवास्तव डी०एन **(1971)** "मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी",विनोद पुस्तक मन्दिर,आगरा-**2**

सारस्वत, मालती गौतम, एस०एल०,"भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक समस्याएँ"
आलोक प्रकाशन,लखनऊ, इलाहाबाद

अग्निहोत्री, रविन्द्र "आधुनिक भारतीय शिक्षा का इतिहास और उसकी समस्याये" राजस्थान हिन्दीग्रन्थ अकाडमी जयपुर।